

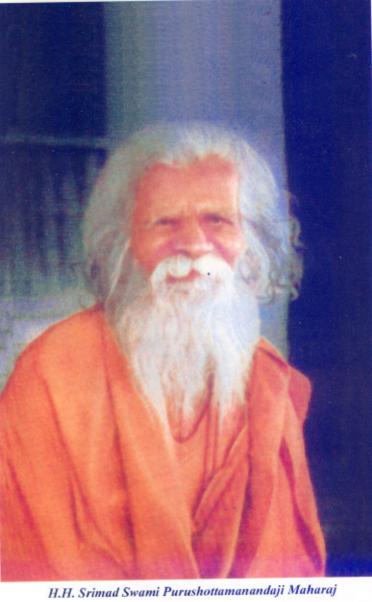
Guru Ashtottara

The 108 Names of Guru With their meaning (In Hindi & English)

By

Swami Shantananda Puri of Vasishtha Guha

The Hindi meanings were published in Souvenir-2004 on 125th Birth Celebration of H.H. Swami Purushottamanand Ji Maharaj. The English meanings were added in June 2012.



श्री मुरुश्यो नमः

श्री गुर्वष्टोत्तर शतनामावली अर्थ सहित

	अर्थ सहित		प्रस्तुतकर्ता : डॉ. एम.के. गुप्ता	
1.	ॐ आनन्दवपुषे नमः	- जिन का सारा शरीर आनन्दमय है उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	10. ॐ कोटिकन्दर्पसुन्दराय नमः	 जो असंख्य कामदेवों की भाँति सुन्दर हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
2.	ॐ आचार्याय नमः	 जो परमार्थ, श्रुति एवं स्मृति का झान देने वाले हैं उन सद्गुरु को मेरा 	1 1 . ॐ कृपावीक्षणाय नम:	- जो करुणामयी दृष्टि वाले हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
		नमस्कार।	1 2. ॐ अतनवे नमः	– जो शरीर के भान से
3.	ॐ आदिमध्यान्त- रहिताय नमः	– जिन का न आदि है न मध्य न अन्त, उन	fir into the part of	रहित हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
	tigated state.	सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	13. ॐ अनन्ताय नमः	– जिन की कोई सीमा अथवा अन्त नहीं है उन
4.	ॐ दयानिधये नमः	– जो दया के सागर हैं उन सद्गुरु को मेरा	1 4. ॐ अजाय नमः	सद्गुरु को मेरा नमस्कार। - जो अजन्मा हैं उन
	Š versuses	नमस्कार।	14. જી ઝળાવ બન:	सद्गुरु को मेरा
5.	ॐ सत्यज्ञानानन्द - रुपाय नमः	- जो सत्य ज्ञान और आनन्द रूप हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	15. ॐ इच्छा निच्छा- विरहिताय नम:	नमस्कार। – जो राग द्वेष रहित हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
6.	ॐ सदाचाराय नमः	- जो सदाचारी हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	16. ॐ अभोक्त्रे नमः	- जो कर्म फल का भोग नहीं करने वाले हैं उन सद्गुरु को मेरा
7.	ॐ योगयोनये नमः	- जिन से सारे योग प्रकट	the special transfer de-	नमस्कार।
		होते हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	17. ॐ अद्वंद्वाय नमः	 न जो शीतोष्ण आदि द्वंद्वों से परे हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
	ॐ प्रज्ञानघनाय नमः	- जो परिपूर्ण ज्ञानमय हैं उन सद्गुरु को मेरा	18. ॐ अचिन्त्याय नमः	– जो कल्पनातीत हैं उन
		नमस्कार।		सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
9.	ॐ पंचकोशविलक्षणाय नमः	- जो पंच कोशों से भी परे हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	19. ॐ गुणत्रयविवर्जिताय नमः	- जो सत्व, रज और तम तीनों गुणों से परे हैं उन सदगुरु को मेरा नमस्कार।



20. 🕉 गुहाशयाय नमः - जो हृदय गुहा में निवास	33. ॐ तत्त्वबोधकाय नमः – जो आत्मा और परम	गत्मा
करते हैं उन सद्गुरु को	की एकता को सम	ग्झाते
मेरा नमस्कार।	हैं उन सद्गुरु को	112000
21. ॐ ज्ञातृज्ञानज्ञेय - – जो ज्ञान, ज्ञाता और ज्ञेय	नमस्कार।	
साक्षिणे नमः (जानने योग्य-वस्तु) तीनों	34. ॐ नित्यशुद्धाय नमः – जो सदा पवित्र हैं	
के साक्षी हैं उन सद्गुरु	उर्थः अर्थायसुद्धाय गर्थः – जा सदा पावत्र ह	
को मेरा नमस्कार।		
	नमस्कार।	
22. ॐ निरञ्जनाय नमः - जो निर्लिप्त हैं उन	35. ॐ नित्यमुक्ताय नमः – जो सदा मुक्त हैं	
सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	सद्गुरु को	भरा
23. ॐ नित्यबुद्धाय नमः - जो नित्य जाग्रत हैं उन	नमस्कार।	
सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	36. ॐ ज्ञानलिंगाय नमः – जिन की पहचान व	
24. ॐ अग्रगण्याय नमः – जो सबसे प्रथम हैं उन	ज्ञान है उन सद्गुर	को
युग्य को ग्रेग व्याप्कार	भरा वमस्कार।	
and office and the second second	 ॐ स्वयंप्रकाशाय नमः – जो स्वयं प्रकाशित है 	र्ड उन
25. ॐ अक्षरायनमः – जो विनाश रहित हैं उन	सद्गुरु को	मेरा
सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	नमस्कार।	
26. ॐ उदासीनाय नमः – जिन पर संसार की किसी	38: ॐ जन्मजरामृत्यु – जो जन्म, वृद्धावस्था	और
(वस्तु या) घटना का प्रभाव	निवारकाय नमः मरण का निवारण	करते
नहीं पड़ता उन सद्गुरु	हैं उन सद्गुरू को	मेरा
को मेरा नमस्कार।	नमस्कार।	
27. ॐ उपदेष्ट्रे नमः - जो उपदेश देने वाले हैं	39. ॐ निर्लेपाय नमः – जो आसक्ति रहित	न हैं
उन सद्गुरु को मेरा	उन सद्गुरु को	मेरा
नमस्कार।	नमस्कार।	
28. ॐ अमलाय नमः - जो निर्मल हैं उन सद्गुरु	40. ॐ अद्भुत चरित्राय नम: - जिन का च	रित्र
को मेरा नमस्कार।	विस्मयकारक है	उन
29. ॐ ज्ञानदेशिकाय नमः – जो ज्ञान के गुरू हैं उन	सद्गुरु को	मे रा
29. ७ शानदाराकाच जनः – जा झान के गुरु है उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	नमस्कार।	
CONTROL OF THE PROPERTY OF THE	41. ॐ अद्वेष्ट्रे नमः - जो द्वेष रहित हैं	उन
30. ॐ तत्त्वमस्यादि वाक्यार्थ – जो तत्त्वमस्यादि वेद	सदगुरु को	मेरा
लक्ष्याय नमः वाक्यों से प्रतिपादित हैं	नमस्कार।	
उन सद्गुरु को मेरा	42. ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः - जिन के ओज की	गति
नमस्कार ।	ऊपर की तरफ़ है	
31. ॐ निष्कलाय नमः – जो अखण्ड हैं उन सद्गुरु	सद्गुरु को	
को मेरा नमस्कार।	नमस्कार।	
32. ॐ तारकाय नमः – जो संसार सागर से पार	43. ॐ सदसद्विरहिताय नमः - जो कार्य कारण रहि	त हैं
कराने में समर्थ हैं उन	उन सद्गुरु को	

सद्गुरु को मेरा नमस्कार।

44. ॐ साधुगम्याय नमः	– जो साधुजनों के लिये सुलभ हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	54. ॐ अन्तर्यामिने नमः	 जो अन्तःकरण निवासी हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
45. ॐ सर्वात्मने नम:	- जो सबजनों के आत्मस्वरूप हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार। - जो शान्त स्वरूप हैं उन	55. ॐ अपरिच्छेद्याय नमः	 जो देशकाल वस्तु आदि उपाधियों से सीमित नहीं हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
47. ॐ अनन्तशक्तये नमः	सद्गुरु को मेरा नमस्कार। - जो असीम शक्तियों से युक्त हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	56. ॐ क्षमिणे नमः	- जो क्षमावान् और सब कुछ सहन करने वाले हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
48. ॐ निष्प्रपञ्चाय नमः	 - जिन पर संसार का कोई प्रभाव नहीं पड़ता उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार। 	57. ॐ कूटस्थाय नमः	 जो हृदय के अन्दर दृढ़ एवं अडिग स्थित हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
49. ॐ ईश्वराणामधीशाय नमः	 जो ब्रह्मा, विष्णु आदि ईश्वरों के अधिपित हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार। 	58. ॐ कैवल्यदायकाय नमः 59. ॐ कपटवर्जिताय नमः	समर्थ हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार। - जो कपट रहित हैं उन
50. ॐ वेदान्तवेद्याय नमः	 जो वेदान्त और उपनिषदों के द्वारा ही जाने जाते हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार। 	60. ॐ कालातीताय नमः	सद्गुरु को मेरा नमस्कार। - जो काल से परे हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
51. ॐ षडूर्मिवर्जिताय नमः	 जिनमें भूख प्यास जैसी छः लहरें उत्पन्न नहीं होती उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार। 	61. ॐ अवस्थात्रयसाक्षिणे	 जो जाग्रत्, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्थाओं के साक्षी हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
52. ॐ षट्भावरहिताय नमः	- जिनमें जन्ममरण, वृद्धि-क्षय इत्यादि छः विकार उत्पन्न नहीं होते उन सद्गुरु को मेरा	62. ॐ अप्रमेयाय नमः	- जिन की महिमा को प्रमाण द्वारा मापा नहीं जा सकता उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
53. ॐ अमृताय नम:	नमस्कार। - जो स्वयं अमर हैं या भक्तों को अमर बना देते	63. ॐ अद्वयाय नमः	- जिन के जैसा और कोई नहीं है उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
	हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	64. ॐ अव्यक्ताय नमः	- जो अप्रकट हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।



को मेरा नमस्कार।

30 30 30 30 30 30 30 30	ં કેંગ્ર	ઇ રૂંઇ રૂંઇ રૂંઇ રૂંઇ રૂંઇ રૂંઇ રૂંઇ રૂં	30 30 3 30 30 30 30
65. ॐ गूढाय नमः	- जो हमारे हृदय में गुप्त रूप सेस्थित हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	77. ॐ असल्लक्षण – विलक्षणाय नमः	- जो असत् वस्तुओं के गुणों से भिन्न हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
66. ॐ ग्रन्थित्रय- विमोक्षणाय नम:	 जो तीनों प्रकार की गाँठों से मुक्तं करा देते हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार। 	78. ॐ अजडाय नमः	- जिन का चैतन्य बाहर प्रकट नहीं होता उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
67. ॐ चिन्मात्राय नमः	- जो केवल चैतन्य ही हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	79. ॐ अपारसंसारार्थ - विघट्टनाय नमः	- जो दुस्तर संसार के प्रयोजन (माया) को नष्ट कर देते हैं उन
68. ॐ ज्ञानगम्याय नमः	- जो ज्ञान द्वारा ही उपलब्ध होते हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	८०. ॐ अमन्यवे नमः	सद्गुरु को सेरा नमस्कार। - जो क्रोध रहित हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
69. ॐ ब्रह्मानन्दाय नमः	– जो परम आनन्दस्वरूप हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	81. ॐ अमोघवैभवाय नमः	 जिनकी महिमा कभी वृथा नहीं होती उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
70. ॐ भवाब्धितारकाय नमः	- जो संसार सागर से पार कराने में समर्थ हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	82. ॐ अभयंकराय नमः	- जो भय से मुक्ति देने वाले हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
71. ॐ परात्पराय नमः	 जो परम वस्तु से भी परे है (ऊँचे से भी ऊँचे हैं) उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार। 	83. ॐ वरदाय नमः	 न न न न न न न न न न न न न न न न न न न
72. ॐ तत्त्वमर्थाय नमः	 जो तत्त्वमस्यादि महावाक्यों के अर्थभूत हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार। 	84. ॐ मुक्तिरूपाय नमः	- जो मोक्ष स्वरूप हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
73. ॐ दुष्टदूराय नमः	- जो दुष्टों से दूर हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	85. ॐ शाश्वताय नमः	 न जो सदा के लिये रहने वाले हैं (अमर) उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
74. ॐ दुराचारनाशनाय नमः	- जो बुरी आदतों के नाशक हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	86. ॐ अखण्ड- महिमाम्भोधये नमः	- जो अखण्ड वैभव का सागर हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
75. ॐ आभास्वराय नमः	- जो सब दिशाओं में प्रकाशमान हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	87. ॐ अखण्डबोधाय नमः	- जो अरुगण्ड चैतन्य स्वरूप हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
76. ॐ विधिविष्णु - शिवाकृतये नमः	– जो ब्रह्मा, विष्णु, शिव के रूप धारण करने वाले हैं उन सदगरु को मेरा	88. ॐ मनोवाचामगोचराय नमः	- जो मन और वाणी की पहुँच से परे हैं उन सद्गुरु

सद्गुरु को मेरा

नमस्कार।

	30 30 30 30 30 30 30 30 30	20 20 20 20 20 20 30 30	20 20 20 20 20 20 20 40
89. ॐ परिपूर्णात्मने नमः	 - जो सब ओर से परिपूर्ण एवं तृप्त हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार। 	99. ॐ अनुत्तमाय नम:	 जिनसे अधिक अन्य कोई उत्तम (श्रेष्ठ) नहीं है उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार
90. ॐ बाह्यान्तरस्थिताय नमः	- जो बाहर और अन्दर व्याप्त हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	100.ॐ दक्षिणाभिमुखाय नमः	 जो दक्षिणामूर्ति स्वरूप हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
91. ॐ भक्तिश्रद्धाध्यान- गम्याय नमः	– जो भक्ति, श्रद्धा और ध्यान द्वारा प्राप्त होते हैं उन सद्गुरु को मेरा	101.ॐ अद्भुताय नमः	 जो विस्मय में डालने वाले हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
92. ॐ निरहंकृतये नमः	नमस्कार। - जो अहंकार रहित हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	102.ॐ अलिंगाय नम:	 जिनकी कोई पहचान नहीं है उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
93. ॐ निर्विकाराय नमः	 - जो विकार रहित हैं उन . सद्गुरु को मेरा नमस्कार। 	103.ॐ निःसंगाय नमः	- जो आसक्ति रहित हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
94. ॐ निर्वेराय नमः	- जो द्वेष भाव से रहित हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	104.ॐ निर्वाणसुखदाय नमः	 नो मोक्ष का सुख देने वाले हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
95. ॐ लक्ष्यालक्ष्यवर्जिताय नमः	- जो प्राप्य और अप्राप्य वस्तु रहित हैं या जो देखने योग्य और न देखने	105.ॐ विगमातीताय वम:	- जो वेदों से भी परे हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।
	योग्य वस्तु में भेद नहीं देखते उन सद्गुरु को मेरा न्मस्कार।	106.ॐ नित्याय नमः	- जो नित्य हैं - जिन का कोई अन्त नहीं है उन
96. ॐ निर्विकल्पाय नमः	- जो भेद रहित हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	107.ॐ धर्मवतांवराय नमः	सद्गुरु को मेरा नमस्कार। - जो धर्म का आचरण करने वालों में श्रेष्ठ हैं उन
97. ॐ अव्ययाय नमः	- जिनका नाश नहीं होता उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।	108.ॐ श्री गुरुमूर्तये नमः	सद्गुरु को मेरा नमस्कार। - जो सद्गुरु के रूप में
98. ॐ अनन्तरूपाय नम:	- जिनके अनगिनत रूप हैं उन सद्गुरु को मेरा		विद्यमान हैं उन सद्गुरु को मेरा नमस्कार।

सत्य की उपेक्षा कभी मत करो। सत्य का पालन करोगे तो वह तुम्हारी रक्षा करेगा।

- श्री स्वामी पुरुषोत्तमानन्द जी महाराज

Meanings of 108 NAMES OF THE GURU

1. I Bow to the guru whose entire body is made up of bliss.

An enlightened guru is one with supreme being whose attribute is bliss.

- 2. I bow to the master who will instruct me on the highest truth, the scriptures and the subsidiary texts.
- 3. I bow to the great master who had no beginning (birth), no middle or end (death).
- 4. I bow to my guru who is the treasure house of compassion.
- 5. I bow to the guru who is of the form of the truth, the ultimate knowledge and bliss.
- 6. I bow to my guru who never swerves from the right conduct.
- 7. I bow to my 'Sadguru' from whom all the paths of yoga have become manifest. The guru gives to various disciples various paths of sadhana for reaching the Lord. So he is the source of all yogas.
- 8. I bow to the guru who is all consciousness.
- 9. I bow to the guru who is beyond the five sheaths. The self in each individual is not easily seen because he is covered by five Sheaths. As for example, the sheath of matter, the sheath of the mind, the sheath of the vital force (life energy), the sheath of intellect and the sheath of relative bliss. So one has to remove them by sadhana in order to understand the true nature of the Guru.

- 10. I bow to the Guru who is as beautiful as crores of gods of love. (Manmatha/Cupid).
- 11. I bow to the Guru whose eyes are full of compassion.
- 12. I bow to the Guru who has no body sense (not aware of his own body).
- 13. I bow to the Master who has no boundary or end
- 14. I bow to the Master who is unborn (had no birth in the real sense)
- 15. I bow to the Guru who is free from likes and dislikes
- 16. I bow to the Guru who, though doing actions does not experience their results
- 17. I bow to the Guru who is free from the pair of opposites like hot and cold, joy and sorrow etc.
- 18. I bow to the Guru who is beyond all mental concepts
- 19. I bow to the Guru who is bereft of all the three modes viz satwa Guna (the quality of light and harmony), Rajo Guna (the dynamic qualities of aggression involving desires, anger etc) and Tamo Guna (procrastination, laziness etc)
- 20. I bow to the Guru who lives in the cave of my heart
- 21. I bow to the Guru who is a witness to the knower, knowledge and the objects to be known
- 22. I bow to the Guru who is untainted by any of the objects of the world
- 23. I bow to the Sadguru who is always awake and alert

- 24. I bow to the Guru who is to be counted as foremost among all the people
- 25. I bow to the Sadguru who cannot be destroyed
- 26. I bow to the Sadguru who remains indifferent and on whom no effect of any object takes place
- 27. I bow to the Guru who gives all spiritual instructions
- 28. I bow to the Guru who is pure
- 29. I bow to the Guru who guides us to the real knowledge
- 30. I bow to the Guru who is revealed by the statements like, "You are that"
- 31. I bow to the Guru who is indivisible and has no parts
- 32. I bow to the Guru who is adept in making us cross the ocean of Samsara
- 33. I bow to the Guru who teaches the ultimate reality of the Oneness of the Atman and the Paramatman
- 34. I bow to the Guru who is always Holy
- 35. I bow to the Guru who is ever liberated. All are divine and ever liberated but most of us are not aware of it. The person who is enlightened realises that he was never bound and was ever liberated
- 36. I bow to the Guru who can be understood only by the ultimate knowledge he possesses
- 37. I bow to the Guru who is self effulgent

- 38. I bow to the Guru who prevents all further birth, old age and death; that is who bestows Moksha
- 39. I bow to the Sadguru who is bereft of all attachments
- 40. I bow to the Guru whose behavior and conduct causes amazement
- 41. I bow to the Guru who is bereft of all enmity or hatred
- 42. I bow to the Guru whose sexual energy is sublimated and made to flow upwards
- 43. I bow to the Guru who is bereft of cause and effect
- 44. I bow to the Guru who is easy of access to the holy people
- 45. I bow to the Guru who is in the form of the self of all
- 46. I bow to the Guru who is full of peace
- 47. I bow to the Guru who possesses boundless powers
- 48. I bow to the Guru on whom the phenomenal world does not have any effect
- 49. I bow to the Guru who is the head of the various Gods like Brahma, Vishnu etc
- 50. I bow to the Guru who can only be known through the philosophy (Vedanta) and the Upanishads
- 51. I bow to the Guru in whom the six waves like thirst and hunger, joy and sorrow etc do not rise up.
- 52. I bow to the Guru in whom the six changes like birth, growth, decline, death etc do not arise

- 53. I bow to the Guru who is either himself immortal or makes his devotees Immortal
- 54. I bow to the Guru who is the Indweller who is in the hearts of all
- 55. I bow to the Guru who is not limited by space, time and object
- e.g. A normal person never existed before his birth, nor will he exist after the day of his death. Time limits him, as a guru is self himself who is existing at all times, he is not bound by time.
- 56. I bow to the Guru who forgives all and is able to bear all sufferings and unhappiness
- 57. I bow to the Guru who remains firm in the heart, immoveable like the peak of a mountain
- 58. I bow to the Guru who is capable of bestowing liberation
- 59. I bow to the Guru who has no crookedness
- 60. I bow to the Guru who has transcended time
- 61. I bow to the Guru who is the only witness to all the three states, namely waking, dream, sleeping state
- 62. I bow to the Guru whose glory is incapable of being measured
- 63. I bow to the Guru who is second to none
- 64. I bow to the Guru who is unmanifest
- 65. I bow to the Guru who Is hidden in our heart

66. I bow to the Guru who liberates us from the three types of knots-

For instance the most important knot is that of the supreme consciousness

And the insentient body (Chid-jada-granthi)

- 67. I bow to the Guru who is all consciousness.
- 68. I bow to the Guru who is easy of access through the ultimate knowledge
- 69. I bow to the Guru who is of the form of supreme bliss
- 70. I bow to the Guru who is capable of making us cross the ocean of samsara (phenomenal world)
- 71. I bow to the Guru who is greater than any object
- 72. I bow to the Guru who constitutes the meaning of the mahavakyas (mega statements- like YOU ARE THAT)
- 73. I bow to the Guru who is far away from the wicked persons (i.e they will not be able to approach him)
- 74. I bow to the Guru who can destroy all our bad habits
- 75. I bow to the Guru who is shining in all directions
- 76. I bow to the Guru who has taken the form of Brahma, Vishnu, Shiva
- 77. I bow to the Guru who is completely different from the qualities of the non existing objects of the world
- 78. I bow to the Guru whose consciousness is not revealed out side

- 79. I bow to the Guru who destroys the illusion of this phenomenal world which looks boundless
- 80. I bow to the Guru who is bereft of any anger
- 81. I bow to the Guru whose glory never becomes futile
- 82. I bow to the Guru who frees us from all fears
- 83. I bow to the Guru who can grant us all boons
- 84. I bow to the Guru who is of the form of liberation
- 85. I bow to the Guru who remains permanently
- 86. I bow to the Guru who is Verily an ocean of un broken glory
- 87. I bow to the Guru who is of the form of an unbroken and integrated consciousness
- 88. I bow to the Guru who is beyond the jurisdiction of the mind and the speech
- 89. I bow to the Guru who is completely plenary and is fully satisfied
- 90. I bow to the Guru who pervades both the inside and the outside
- 91. I bow to the Guru who can be obtained through devotion, faith and meditation
- 92. I bow to the Guru who is free of ego
- 93. I bow to the Guru who undergoes no changes

- 94. I bow to the Guru who has no enmity
- 95. I bow to the Guru who makes no distinction between objects worthy of seeing and not worthy of seeing
- 96. I bow to the Guru who is free from all differentiation
- 97. I bow to the Guru who is beyond destruction
- 98. I bow to the Guru who has infinite forms
- 99. I bow to the Guru who cannot be surpassed in his greatness by anybody
- 100. I bow to the Guru who is in the form of Dakshinamurthi, the first divine master who revealed the ultimate knowledge.
- 101. I bow to the Guru who is all wonder
- 102. I bow to the Guru who cannot be recognised by any symbols or signs
- 103. I bow to the Guru who is free from all attachment
- 104. I bow to the Guru the one who can bestow on us the bliss of liberation
- 105. I bow to the Guru who has transcended the scriptures
- 106. I bow to the Guru who is eternal and has no end
- 107. I bow to the Guru who is the best among those who follow the righteous conduct
- 108. I bow to the Guru who is shining in the form of a sadguru.

HariOM